अष्टम् मण्डल

ऋषिग्राममे उल्लासक वातावरण अछि।

उल्लास अछि सहभोजक कारणें, उत्सव अछि वामदेव्य ऋषीक कुशाश्वक ओहिठाम उपनयनक कारणे।

उपनयनक यज्ञ वेदी छोट हेवाक कारणे ऋषिग्रामक अन्य जन, नर-नारी वेदीक चारूकातसँ आंगनमे बैसल छथि।

आत्रेय ऋजाश्व, भारद्वाज मित्रातिथिसँ किछु दूरमे बैसल छथि आ मित्रातिथिक कौशेय-वस्त्रके देखि रहल छथि।

राजा वल्वूथ दासक ओहिठाम जतेक ऋषि, ऋषीक ऋषि-पुत्र तथा ब्रह्मचारी वटुक लोकनि गेल छलाह, सब प्रायः कौशेय वस्त्रे एहि उत्सवक अवसर पर पहिरने छथि। एकमात्र आत्रेय ऋजाश्व नञि।

ऋषि ऋजाश्व बहुत कालसँ एहि उत्सवक अवसर पर भारद्वाज ऋषि मित्रातिथिक शिश्नदेव पूजन प्रसंग प्रश्न उठब' चाहैत छथि। एहन-एहन सामाजिक प्रसंग तँ एहने सामाजिक उत्सवमे उठेबाक प्रथा अछि।

उपनयनक उत्तरार्द्ध कृत्य सम्पन्न भ' रहल अछि। ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिन वेदी परसँ उतरि रहल अछि।

ब्रह्मचारिनक आयु उपनयनसँ किछु अधिके भ' गेल अछि।

उपनयनक उपरान्त दुहिता लोकनि श्रुति अभ्यासमे लागि जेतीह आ तखन कुलमे वस्त्र उत्पादन आरो घटि जायत।

ऋषिग्राममे वस्त्रक अधिक प्रयोजने नञि रहैत अछि। पुरुषजन मृगचर्मे धारण करैत अछि, नीचामे रहैत अछि अति क्षुद्र नीवी (विष्ठी)। वस्त्रक प्रयोजन स्त्रीये वर्गमे अधिक होइत अछि। नीचामे नीवी, ताहि पर छोटछिन अधोवस्त्र खंड आ ताहि परसँ बाहर जेबाकाल पुनः मृगचर्म।

'ओम्हर हेलमन्द तट दिशि--हेलमन्द तटवासी गृत्समदेव महर्षि अरिष्टनेमि बाजि रहल छलाह -जिवजन केर धारणा अछि जे अति प्राचीनकालमे हमरालोकनिक

आदिम पूर्वज, जखन कश्यपे सागरक आसपास छलाह, अग्निकें पजारि देवक अर्चनामे मंत्रगान मात्र करैत छलाह। ओहि अग्निसँ शीतरक्षा सेहो होइत छल आ वन्य पशुसँ जन-धन तथा पशुधनक रक्षा सेहो। ओहि समयमे ने कोनो यज्ञ होइत छल आ ने कोनो याज्ञिक अनुष्ठाने।'

'से आरम्भ भेल पार्शव क्षेत्रसँ।

'कश्यप सागर तटसँ प्रस्थान-पूर्वे द्यौस आ त्वाष्ट्री गौणदेव भ' गेल छलाह तथा प्रधान भऽ गेल छलाह देवराज इन्द्र-मित्र-वरुण आदि।...'

'ओ काल प्रधानतः युद्ध काल छल। पशुपालन एक मात्र कार्य। ई युद्ध आ पशुपालन हेलमन्द तट धरि चलैत रहल। युद्ध परस्परो होइत रहैत छल आ अनार्योजनसँ। एहि समय धरि ब्राह्मण कर्मक आ क्षत्रिय कर्मक विभाजन नञि भेल छल। सब क्षत्रियो छल आ ब्राह्मणो छल। किन्तु ब्राह्मण कर्मक अपेक्षा क्षत्रिय कर्मक प्रधानता छल। आ तें क्षत्रिय केर वर्चस्व छल।...'

'देवासुर संग्राम तथा हेलमन्द तटक पश्चात् दुनू कर्म भिन्न होम' लागल। आर्यजन नहुँ नहुँ पूर्व दक्षिण दिशा दिस ससरि रहल छल। बीच-बीच मे अन्य आर्यजन समूह सेहो अबैत रहैत छल। परस्परो तथा आर्य भिन्नोजनसँ युद्ध निरंतर चलिये रहल छल। तें क्षत्रिय वर्चस्व निरंतर प्रधान रहल।...'

'हेलमन्दक पश्चात् मंत्र-द्रष्टा ऋषि महर्षि लोकनि मंत्रमे देवक तथा अपन नाम राखऽ लगलाह। ई सर्वथा नवीन प्रथा छल। पूर्वमे नाम देवाक प्रथा नञि छल।...

'हेलमन्दक पश्चात् एकटा आरो प्रथा चलल जकर बहुत प्रयोजन छल। पूर्वमे श्रुति अभ्यासक कोनो परम्परा नञि छल। मंत्र छल कम आ समय छल अधिक। मंत्र गायन निरंतर चलिते रहैत छल स्वतः, विशेषतः सत्रिक अग्नि आधानक पश्चात्। किन्तु देवासुर संग्राम ततेक दिन चलल जे अधिकांश मंत्र लोक विसरि गेल। प्रातः सब विसरि गेल। जे किछु स्मरण रहि सकल ओहिमे सँ अछि यमयमी वार्ता-मंत्र।'

'तें हेलमन्द तटक वास कालहिसँ पुनः मंत्र दर्शनमे तीव्रता आयल जे क्रमशः वढ़ले गेल आ नामांकन सेहो भेल। सङहि अभ्यास द्वारा स्मरणक प्रथा प्रारम्भ भेल, नञि तँ पुनः विस्मरणक भय छल।'

'यैह अभ्यास प्रथा ब्राह्मण कर्मकें प्रधानता देलक आ मंत्रक नामे पड़ि गेल श्रुति। यैह ब्राह्मण कर्म श्रुतिकें यज्ञसँ जोड़ि देल जाहिसँ स्मृति (स्मरण)क